जून दो हजार चारः जागरण सखी मे प्रकाशित

एक तुम वही ढूँढ पाता है जो अपना स्वयम भेंट मे दे देता है।

तुम्हे गुजरे तीन वर्ष होने को आए।मै कल सपरिवार तुमसे मिलने आया था।उनसे तो मै तुम्हे तुम्हे कब का मिलवा चुका हूँ और मिलवाता रहता हूँ।बच्चियॉ बड़ी हो चली हैं।अनामिका पॉच वर्ष की और अनिशा दो वर्ष की हो चली है।जब मैने अपनी बड़ी को अनामिका नाम दिया था, तब तुम्हे मैने बहुत याद किया था।इस नाम का आज तक मेरे पास बस एक ही अर्थ है और रहेगा।एक सौन्दर्य जिसे कोई नाम नही दिया जा सकता।

तुम भी तो एक अनाम सौन्दर्य हो।

अनिशा हमारे लिए एक सुबह है, जो उसकी नटखट किरणों की तरह दिन भर चटकती, ठनकती, मुस्कराती, चहकती और खिलखिलाती रहती है।

तुम्हारे सिरहाने लगा वर्च का पौधा कुछ ज्यादे ही बड़ा हो चला है।उससे मै अगले वर्ष पतझड़ से पहले जाकर कहूँगा कि वो अपना कद इतना न बढाए, पर तुम्हारे आसपास लगे आल्सालेएन लाल लाल फूलों से लदे पड़े हैं।चलते वक्त मै एक फूल तोड़ लाया था, जिसे मैने तुम्हारी तश्वीर के सामने एक छोटे से वाज़े मे लगा दिया।दूसरे दिन जब मै काम से वापस आया तो वो फूल गायब था।उसे मेरी बेटियॉ चुराकर अपने कमरे मे ले जा चुकी थीं।मैने उनसे कुछ नही कहा।अनामिका उसे अपने टेबल पर एक वाज़े मे सजा रखी थी।

अक्सर वो दोनो मेरी गोद और गर्दन पर चढ कर मुझसे पूछती हैंःपापा ये तश्वीर किसकी है!

मै उन्हे तुम्हारा नाम बताता हूँ।

वो फिर पूछती हैंःपापा ये उरसला कौन है!

जब उनसे मै कहता हूँ कि उरसला मेरी सबसे अच्छी सहेली है तो वो मुझे मारने लग पड़ती हैं।दोनो के बीच ऐसे भी मेरी सबसे अच्छी सहेली बनने की होड़ मची रहती है।एक ग्लास पानी तक उनसे मेरे लिए उनसे लाया नही जाता, पर मेरी सहेली बनने को दोनो तैयार बैठी रहती हैं।

तुम मेरी एक अच्छी सहेली हो, इसके अलावे मै उन्हे तुम्हारे बारे मे और कुछ नही बताता, तब भी नही जब मै उनके साथ तुमसे मिलने आता हूँ।

अनामिका तो तुम्हे उरसला ही कहके बुलाती है।कभीं कभीं चिढ कर वो तुम्हे तूसी भी कहती है।अनिशा तुम्हारा पूरा नाम नही ले पाती।वो तुम्हे सेला कहती है।तुम इन दोनो को अपना आशीर्वाद देती रहना।जब ये थोड़ी बड़ी हो जाएँगी, तब इन्हे मै तुम्हारे बारे मे सविस्तार सब कुछ बताऊँगा।जो सम्मान तुम्हे मैने दे रखा है, वही मै तुम्हे इनसे भी दिलवाऊँगा।

लड़कियॉ हैं, अपने पापा को किसी के साथ बॉटना नही चाहतीं।

उरसला से मेरी मुलाकात मार्टिन लूथर अस्पताल मे हुई थी, जहॉ मुझे अपने पेट के अल्सर की वजह से छ सप्ताह रहना पड़ा था।मुझे इस अस्पताल मे आए दस दिन से ऊपर हो चले थे, लेकिन मेरे पेट के दर्द ने मुझे इतना बेहाल कर रखा था कि मुझसे अपना बिस्तर तक छोड़ा न जाता था।मुझे मालोक्सान नाम की एक दवा दी जाती थी, जिसे पीने के बाद एकाध घन्टे के लिए ये दर्द दब जाता था, पर दूसरी बार फिर दूनी ताकत से उभरता था।कभीं कभीं मुझे लगता था कि ये दर्द मेरी जान लेकर ही दम लेगा।मुझे सोस्ट्रील नाम का एक कैपसूल भी दिन मे तीन बार निगलने को दिया जाता था, साथ साथ मुझे एक परहेजी खाना भी दिया जाता था, पर मेरे पेट का दर्द एक तरह से मियादी हो चला था।सिगरेटों की मुझे सख्त मनाही थी, पर मै जब तब टवायलेट मे जाकर सिगरेट फूँक आता था।इसके बाद तो मेरे पेट का दर्द जानलेवा ही हो जाता था।फिर मुझे बेल पर अपना अगूँठा रखना पड़ जाता था।वार्ड के सभी लोग दौड़े भागे मेरे पास आते थे।बेल पर अपना ॲगूठा रखते वक्त न मै घड़ी की ओर देखता था, न अपनी गलतियों की ओर।तत्काल मुझे मालोक्सान की एक पूड़िया खोलकर पीने को दी जाती थी, जिसका असर पॉच दस मिनट के बाद ही होता था।कोई मेरे बाल सहलाता होता था, तो कोई मुझे गोद मे लिए होता था, कोई मुझे इधर उधर की बातों मे बहलाने मे लगा होता था, तो कोई मेरे बिस्तर की सलवटें ठीक करता रहता था।

एक नर्स मेरा पेट सहलाती रहती थी, जिससे मुझे बड़ा आराम मिलता था।जब मेरे पेट का दर्द थोड़ा कम हो जाता था, तब दूसरे तो चले जाते थे पर वो मेरा बिस्तर छोड़ कर नही हटती थी।अपने एक हॉथ की ॲंगलियॉ मेरी ॲंगलियों से उलझाए वो तब तक मेरा पेट सहलाती रहती थी, जब तक कि मेरा दर्द बिल्कुल ही खत्म न हो जाता था।तब मै जान पाता था कि वो करीब करीब मुझ पर झुकी या पसरी पड़ी है।फिर मेरी ऑखें बन्द होने लगती थीं।

ये सौम्य चेहरा मेरे मन पर इतना अंकित हो चला था कि उसे देखते ही मैने एक पल मे पहचान लिया और बिना उससे पूछे उसके सामने जा कर खड़ा हो गया।बिना किसी झिझक के उसे अपना अपना परिचय भी दिया।पता नही वो किन फाईलों मे व्यस्त थी, पर उसने अपनी भवें न चढाई बल्कि फाईलों को एक तरफ सरका कर वो उठी और बड़े प्यार से मेरा हॉथ थाम कर मुझे बैठने के लिए एक कुर्सी भी खींच दी।मेरी बॉहे थामे सावधानी से मुझे मेरी कुर्सी पर बिठा कर वो अपनी कुर्सी पर जा बैठी और बड़े ही प्यार से पूछीःतुम्हारे पेट का दर्द कैसा है प्रमोद!तुम्हारे लिए एक कप चाय बनाऊँ!

मै अपने गाल पर अपनी तीन ॲंगलियॉ गड़ाए इस अनाम सौन्दर्य को अपलक देखे जा रहा था।हॉ मे सिर्फ मै अपने कन्धे ही उचका सका।

रात के दस बजे उसकी ड्यूटी खत्म होनी थी।जब तब उसे दूसरे पेशेन्टस के बेल पर उठना पड़ता था, पर जाने से पहले वो मुझसे कह गई थी।तुम यहीं रहना, मै अभी आई।पहले दिन वो मुझसे सिर्फ बर्लिन के बारे मे ही पूछती रहीःतुम बर्लिन मे क्या कर रहे हो!बर्लिन तुम्हे कैसा लगता है!अपनी पढाई खत्म करके तुम यहॉ रहोगे या वापस चले जाओगे!इत्यादि इत्यादि

मेरे पेट का दर्द जब थोड़ा दयावान हुआ, तो मेरी अवारगी करवट बदली।सुबह दस बजे के बाद वार्ड नम्बर ग्यारह के बिस्तर से लगे तीन मरीजों के अलावे सारे स्वतंत्र थे।जिसे जो करना होता था, करता था, जिसे जहॉ जाना होता था, जाता था।इनस्योरेंस पोलिसी के नियमों के तहत हमारे लिए अस्पताल का अहाता छोड़ना वर्जित था, पर मै रोज ही शहर की तरफ बढ जाता था।यहॉ का डाऊन टाऊन कू डाम भी अस्पताल से ज्यादे दूर न था।दिन भर इधर उधर घूम घाम कर गई शाम वापस अस्पताल आ जाता था।मेरा खाना पीना शहर मे ही हो जाता था।अस्पताल के परहेजी खानों की तरफ तो मै देखता तक न था।वार्ड मे सिगरेट पीने की मनाही थी, पर उससे लगे टेलीविज़न वाले कमरे मे नही।मै वही जाके

सिगरेटें फूँक आता था। अस्पताल का लाऊन्ज भी मेरे वार्ड से ज्यादे दूर न था. जहाँ चमड़े के सोफे और बड़े बड़े एस्ट्रे रखे हुए थे। मै वहाँ भी अक्सर चला जाया करता था। हमारी हेड नर्स मारीना मुझे समझा समझा कर हार गई। कई बार वो मुझे धमकी भी दीःमुझे डाक्टर पोलसीन से तुम्हारे बारे मे सब कुछ बताना पड़ जाएगा। पर मै उसकी बातों पर कान तक न धरता था। दूसरी नर्से अपना दायित्व निभा कर घर चली जाती थीं। मुझसे उलझने या अपना माथा खपाने के लिए उनके पास समय न था।

उरसला ज्यादेतर नाईट शिफ्ट मे ही काम करती थी। रात के दस बजे उसका शिफ्ट शुरू होता था. जिसका मै बड़ी व्यग्रता से इन्तज़ार करता था। उसके कैबिन के सामने वाली खिड़की के तख्त पर मै ठीक पौने दस बजे जाके बैठ जाता था। वार्ड मे उसकी पहली मुलाकात मुझी से होती थी। मेरे हलो के जबाव मे अपने रूक्जाक हल्के से मेरे घुटनो पर मारके वो अपने कैबिन से लगे एक कमरे मे घुस जाती थी। कपड़े वगैरह बदलने के बाद वो पहली वाली शिफ्ट के नर्स से अपनी डयूटी टेक ओवर लेती थी। जब तब वो अपनी नजर मेरी ओर फेर कर मुस्कराने लगती थी। सवा दस बजे वो आ कर मुझे अपने कैबिन मे लिवा जाती थी। मुझे रोज ही उससे सुनना पड़ता था...कल से तुम अपने कमरे मे मेरा इन्तजार करना। इस खिड़की की तख्त पर नही। इसके पल्लों से ठंढी हवाएँ अन्दर आती हैं। खामखाह तुम्हारे कमर या पीठ मे दर्द उभर सकता है।

मै उसके कहे पर कान तक न धरता था और फिर इतना संयम भी मुझमे न था। साढे नौ बजे से ही मै असहज होने लगता था।

फिर मै सुवह के पाँच बजे तक कैबिन मे बैठा उससे गप्पें मारा करता था। बचपन. अपने स्कूल के दिन. अपने गाँव. कॉलेज और मास्को मे बिताए वर्ष. अपनी एक एक अवारगी. सब कुछ मै उसे बता चुका था पर अभीं भी मेरे पास सुनाने को बहुत कुछ था। उरसला बिना किसी टिक्का टिप्पणि के पूरी तन्मयता से मुझे सुनती रहती थी। अपने बारे मे वो कुछ ज्यादे ही कम बोलती थी. पर मै उसकी उम्र जान चुका था। मुझे ये भी पता चल चुका था कि वो कट्टर कैथोलिक है और अविवाहित है।

सुवह पाँच बजे वो मुझे मेरे बिस्तर पर पहुँचा कर गर्दन तक रजाई खींच जाती थी। मै सो जाता था और दोपहर तक सोता रहता था। उठने के बाद नहा धोकर सैर सपाटे पर निकल जाता था और सात आठ बजे शाम तक घूमता रहता था।

एक दिन बिना मेरे हलो का जबाव दिए उरसला अपने कैबिन मे चली गई। मेरा माथा ठनका. फिर मै सोचा. शायद उसे किसी बात की जल्दी होगी। कपड़े वगैरह बदल कर वो मुझे जरूर बुलाने आएगी. पर ऐसा कुछ न हुआ। उसने मेरी तरफ एक बार भी भूल से भी न देखा। डयूटी का चार्ज लेने के बाद अपने को मरीजों के फाईल्स मे व्यस्त कर लिया। ये मेरे लिए किसी सदमे से कम न था।

मै चुपचाप अपने वार्ड मे चला आया और अपनी कुर्सी खींच कर खिड़की के सामने लगा ली। दिसम्बर का महीना चल रहा था. पर पता नही कैसे बर्लिन का तापमान प्लस मे आ गया था। अस्पताल के लॉन मे गिरी और जमी बर्फे पिघल रहीं थी। फिर भी सूर्यास्त के बावजूद बाहर उजाला ही उजाला था। मै बैठा बस यही सोचे जा रहा था कि कहीं कल गलती से मै कोई ऐसी बात तो उरसला को नही कह गया. जिसका वो बुरा मान गई हो। अगर ऐसा कुछ होता तो मै कल ही नोटीस कर लेता। सब कुछ सामान्य था। वो मेरी बाँह थामे बिस्तर तक भी लाई थी। वो अचानक मुझसे किस बात पर नाराज हो बैठी है!

कई बार मैने फ्लोर पर कदमों की आहटें सुनी। मुझे लगता था कि शायद उरसला मेरे पास आ रही है. पर पास आती आहटें फिर दूर हो जाती थीं। एक बार तो उसे मेरे कमरे मे भी आना पड़ा. पर वो एक मरीज के ग्लूकोज़ का बोतल बदल कर फिर चली गई। न मुझसे सोने को कहा. न मेरी ओर देखा। घन्टों मै अपने कुर्सी पर बैठा बाहर देखता रहा. जहाँ अब अन्धेरा खींच आया था। अब तक मैने डाक्टर पोलसीन से एक बार भी न पूछा था कि मुझे अस्पताल मे कब तक रहना है! कल उनसे पूछूँगा. ये तय करके मै उठा ही था कि अचानक मेरे कमरे का दरवाजा खुला। एक धीमी सी आवाज मै बस यही सुन पायाःअगर तुम सो नही रहे हो तो कैबिन मे जाकर मेरे और अपने लिए दो कप चाय क्यों नही बनाते!

मेरी खुशी का कोई ठिकाना न था। मै भगा कैबिन मे जा पहुँचा और चाय बनाने मे व्यस्त हो गया। अपना काम निपटा कर उरसला कैबिन मे आई और ये कहते हुएःआज की रात लगता है भाग दौड़ मे ही बीतेगी. सारे मरीज जगे हुए हैं. अपनी कुर्सी पर जा बैठी। मुझे भी बैठने को कह कर वो चुपचाप चाय पीने लग पड़ी। मै अपना मन मजबूत किए उसके कुछ कहने का इन्तजार करने लगा।

उसकी ममतामयी आँखें मुझे बड़ी बुझी बुझी सी दिखी

ःदिन मे कितनी सिगरेटें पीते हो!

मै थोड़ा सहज हुआ। चलो उसकी नाराजगी सिगरेटों की वजह से है और मै घन्टों बैठा पिछले रात की कही एक एक बात का रेशा उधेड़े जा रहा था। अब मै बिल्कुल सामान्य था

ःपता नही. मै उन्हे कभीं गिना नही।

ःमेरे पास आज स्वेस्टर मारीना का फोन आया था। मै अपनी आँखों से तुम्हारे कम्पयूटर टोमोग्राफी की तश्वीरें देख चुकी हूँ। तुम्हारे आँतों की फूँसियाँ बजाय सूखने के घाव बनती चली जा रही हैं। न तो तुम ढंग से कुछ खाते पीते हो और ऊपर से अनगिनत सिगरेटें पीते हो। तुम मुझसे भी झूठ बोलते हो। टवायलेट का बहाना बना कर तुम सिगरेट पीने जाते हो। अगर तुम्हारा गेस्त्रूअर क्रॉनिक हो गया तो कैन्सर तुमसे बहुत दूर नही है। क्या उम्र है तुम्हारी! सात वर्षो से मै तुम लोगों की सेवा मे लगी हूँ। चर्च और तुम लोगों की सेवा के अलावे मेरे पास तीसरी व्यस्तता नही है। आए दिन ही मेरा मौतों से सीधा सामना होता है। जब बड़ी उम्र के मरीज गुजरते है तो मै ये सोच कर अपने मन को समझा लेती हूँ कि चलो समय के साथ एक न एक दिन हम सभी को इस संसार से जाना है। गुजरने वाला अपना जीवन तो जीया। पर कम उम्र की मौतें मुझे हमेशा तोड़ती रही हैं। अगर मै अपना दर्द तुम्हे दिखा सकती तो जरूर दिखाती। बिना आँसुओं और प्रार्थनाओं के मेरे पास एक भी शाम नही है और तुम अपनी लापरवाहियों से मुझे सताते हो. मेरा दिल दुखाते हो। मै तुम पर किसी तरह की सख्ती नही कर सकती. बस तुम्हारे सामने रो और गिड़गिड़ा सकती हूँ। मुझे तुम अपना कहते हो. पर तुम्हे मुझ पर तनिक भी दया नही आती!

इससे आगे उससे एक शब्द भी न बोला गया।

उसकी आँखें भर आई थीं। उसके ओंठ काँप रहे थे।

मै एकवारगी आवाक रह गया। घर परिवार से हजारों किलोमीटर दूर परदेश मे एक कम उम्र की नर्स को मेरे स्वास्थ्य और जीवन की इतनी चिन्ता है। अपने और पराये के सारे भेद भाव भूला कर मेरी लापरवाहियों पर वो मेरे सामने बैठी रोये जा रही है।

मेरी संवेदनशीलता पर ये एक झन्नाटेदार तमाचा था।

मुझसे रहा न गया।मै उठा और उसका कन्धा हल्के से सहला कर अपने कमरे मे चला आया।मैने उससे कोई वायदा नही किया पर मन ही मन मै एक फैसला कर चुका था।
मुझमे आए परिवर्त्तनो से पूरा वार्ड ही हतप्रभ था।एक ही झटके मे मै सत्य से एक आज्ञाकारी और आदर्श मरीज बन गया।मै उरसला का दिल सपने मे भी नही दुखा नही सकता था।
पता नही क्यों पर उसकी ऑखें उदास होने के लिए बनी ही न थी.ऑसुओं की तो बात ही दूर की रही।
मेरे कम्प्यूटर टोमोग्राफी के रिजल्ट अच्छे होते जा रहे थे.जिसकी खुशी स्वेस्टर मारीना को ही नही.डाक्टर पोलसीन को भी थी.पर सबसे ज्यादे खुशी उरसला को थी।मुझे देखते ही वो बिना किसी संकोच के मुझे गले से लगा लेती थी.जिसका दूसरा या तीसरा अर्थ कभीं न लगाया जाता था।
जब दिन मे उसकी डयूटी होती थी तो वो समय निकाल कर थोड़ी देर मुझे अस्पताल के लॉन मे घूमाने भी ले जाती थी और हर एक पेंड़ पौधो से मेरा परिचय करवाती थी।
रात की शिफ्ट मे मै अब उसके साथ सुबह तक न बैठ पाता था।दो बजते ही मेरी पलकें भारी होने लगती थी।मुझसे अपनी जम्हाई चाह कर भी न रोकी जाती थीं।
मेरे और उरसला का सम्बन्ध कम से कम मेरी ओर से एक सिस्टर और पेशेन्ट का सम्बन्ध न था।उसकी ओर से इस सम्बन्ध का क्या रूप था.मै न जान पाया।
मेरे भाग्य मे बस उसके जीवन के कुछ अन्तिम दिन ही लिखे थे।मुझसे उसके लिए जो भी हो सका.मैने किया.पर मुझे एक दिन वो अल्विदा कह गई।उसके अन्तिम समय मे मै उसके साथ न था।मुझे उससे दूर रखा गया.क्योंकि मै उसका सगा सम्बन्धी न था।
जिस अस्पताल मे उसकी मौत हुई थी.वहीं मै काम भी करता था.पर मेरे तमाम सम्बन्ध नाकाम साबित हुए।उसके बारे मे एक भी डॉक्टर मुझसे बात करने को राजी न था।सब कुछ कनफिडेन्सियल रखा गया।
वार्ड नम्बर दो की एक नर्स स्वेस्टर मानुएला का मेरे पास रात मे ढाई बजे फोन आया थाःउरसला का आखिरी समय आ गया है।उसे ओ पे मे ले जाया गया है।
ये सुनते ही मेरे पैरों के नीचे की जमीन ही खिसक गई।आनन फानन मैने अपने कपड़े बदले और अपनी सायकल बिना किसी रफ्तार की परवाह किये अस्पताल की ओर दौड़ा दी।इसकी बत्तियों को भी आज के ही दिन मुझे धोखा देना था।सायकल स्टैंड पर अपनी सायकल पटक कर वगैर लिफ्ट का इन्तजार किये मै तीर की तरह सीढियॉ नापता सातवीं मंजिल पर पहुँचा.पर इस रात मुझे इतना भी पता न लग पाया कि ओ पे के किस हॉल मे उरसला के शरीर का हर वो अक्षत हिस्सा अलग किया जा रहा है.जो किसी जरूरतमन्द मरीज के काम आ सके।
मेरी टॉगें कॉप रही थी।धम्म से मै फ्लोर मे लगे एक सोफे पर ढेर हो गया।मन ही मन मै बस यही दुहराये जा रहा थाःउरसला का उससे कुछ भी न लो।अपनी छोटी सी उम्र मे उसने हमे बहुत कुछ दिया है।सब कुछ तो उसकी बीमारी ने उससे ले लिया।क्या बचा है उसके पास!न उसके पास उसका स्तन रहा.न उसके लम्बे बाल।अपनी मधुर आवाज भी उसके पास न रही।जिन ऑखों मे मै डूबने के डर से झॉकता तक न था.वो भी तो एक बड़ी सी कटोरी की तरह उभर आई थी.जिनमे उसकी पुतलियॉ छोटी गोलियों की तरह उसके दीवारों से टकराती होती थीं।शरीर के नाम पर उसके पास एक चमड़े की झोली मे बन्द दो चार हडियॉ ही तो बची हैं।कुछ तो छोड़ दो उसके पास.जिसे दफनाया जा सके।
स्वेस्टर मानुएला के फोन और उरसला के कब्र का पता लगाने के दरम्यान का अन्तराल दो महीने का रहा।बड़ी मुश्किल से मै उसके कब्र का पता लगा पाया।इन दो महीनो मे मैने न जाने कितने फोन कहॉ कहॉ खटकाए।हर फोन पर सभी का पहला सवाल यही होता थाःआप उरसला के क्या लगते हैं!एक दोस्त.सुनते ही लाईन काट दी जाती थी।
जिस बेस्टाटूंट इन्सटिच्यूट से मेरे अस्पताल का कान्ट्रेक्ट था.उसका पता मुझे मालुम था।ये इन्सटिच्यूट मेरे घर के रास्ते पर ही था।रोज ही वहॉ अपनी सायकल रोक कर मै बिना अपने मान अपमान की परवाह किए जाता था।मेरा दिल कहता था कि कम से कम इस इन्सटिच्यूट को उरसला के कब्र का पता मालुम है।बस मुझे ये बताना नही चाहते।एक बार तो इन्होने मुझे पुलिस तक बुलाने की धमकी भी दी।
टेलीफोन डायरेक्ट्री मे बर्लिन मे पैंतीस कब्रगाहों का पता था।अब मैने वहॉ फोन करना शुरू किया।सौभ्गायवश मुझे उरसला का फैमिली नेम और उसका पता मालुम था.वरना मै उसे शायद कभीं न ढूंढ पाता।न जाने कितने फोनों के बाद मुझे एक दिन उरसला के कब्र का पता मिल पायाःबेर्ग स्ट्रासे.लेन सात.कब्र नम्बर तीन सौ इक्कीस।
ये सन उन्नीस सौ चौरानबे की बात है।ग्यारह अक्टूबर सोमवार दिन के तीन बज रहे थे।मै सायकल दौड़ाता बेर्गस्ट्रासे भागा।कब्र के दफ्तर से एक नक्शा लेकर मै उरसला का कब्र ढूँढने लगा।
लेन सात इस कब्रगाह का सबसे उपेक्षित इलाका था.जो अनाम कब्रो से भरा पड़ा था।यहीं कहीं उरसला भी उन बेनामों के साथ लेटी हुई थी.जो सेकेन्ड वर्ल्ड वार के बमबारियों मे गुजरे थे.जिनकी शिनाख्त न हो पाई थी।मै अब कब्र नम्बर तीन सौ इक्कीस के सामने खड़ा था।उरसला सतरह ईटों की एक छोटी सी चारदीवारी मे बेनाम लेटी थी।इस चारदीवारी के घास बेतरीब.बेढंग.बदशक्ल बढे पड़े थे और वहॉ लगाए कॉस्मियास सूख कर कॉटे हो चले थे।
अकस्मात मुझे उरसला की पनीली ऑखें याद आई और मै फूट फूट कर रोने लग पड़ा।मुझसे खड़ा नही रहा गया।दोनो बाहें अपने घुटनो से दबाये मै घन्टों उसकी कब्र पर बैठा बस रोता ही रहा।घर पर भी जब भी मेरी नजर उरसला की तश्वीर पर या मार्टिन लूथर अस्पताल छोड़ते समय उसकी दी गई भेंट पर पड़ती थी.मेरा गला इतना रूँध जाता था कि मुझसे सॉस तक न ली जाती थी।
सन चौरानबे अक्टूबर के इस सप्ताह मे मै बहुत रोया।कभीं कभीं तो गले मे आया तनाव कई दिनो तक खत्म ही न होता था।
पूरे सप्ताह कई बातों के अलावे.मुझे मार्टिन लूथर अस्पताल की एक शाम भी बेहद याद आई.जिस दिन उरसला ने मेरे कहने पर अपना लिखा एक डिक्ल्येरेशन मुझे पढने को दिया था.जो फ्री यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेन्ट हेर गेरलाख के नाम था...मै उरसला स्लिंगर अपने पूरे होशोहवाश मे आपके क्लिनिकुम स्टेगलित्स को अपने मरने के बाद अपने शरीर का हर हिस्सा.जो जरूरतमन्द मरीजो के काम आ सके.डोनेट करती हूँ।शेष आप हिन्डेनबुर्ग डाम के तेरह नम्बर के बेस्टाटूंग इन्सटिच्यूट को सौंप देंगे.जो आप के क्लिनिकुम के करीब ही है।इनसे मेरे इन्श्योरेंस का एक

कानूनी पैक्ट है।इस डिक्लेयरेशन की कॉपियॉ उन्हे मिल चुकी है।इस डिक्लेयरेशन का नोटेरियल एक सप्ताह के अन्दर मै आप को भेज दूॅगीं।
मै तो एकवारगी स्तब्ध ही रह गया.पर मैने उसे किसी भी वहस मे न खींचा।वस एक ही ख्याल ने मुझे व्यस्त कर रखा था कि क्या उरसला के पास ऐसा कोई सगा नही है.जो उसे उसके निर्णय से पलट सके!
डिक्ल्येरेशन उसका था.पर मुझे अपने ही सामने यमराज के न जाने कितने दूत नंगे नाचते नज़र आ रहे थे।
वड़ी हिम्मत करके मैने उससे पूछाःतुम्हे ऐसी कोई वीमारी है क्या!
ःनहीं
ःफिर ये डिक्लेयरेशन क्यों!इसे फाड़ दो।अपना जीवन जीओ।क्यों तुम इस वजनी क्रास को अपने जीवन के आने वाले वर्षो मे ढोना चाह रही हो!
बिना कोई जवाव दिए इशारे से ही उसने अपनी फाईल वापस मॉगी और उसे अपने रूकजाक मै डालते हुए कहाःपता है सत्य तुम्हे!तुम सिर्फ पूर्न जन्म मे विश्वास करते हो.मै इसे सावित करना चाहती हूॅ।मरने के वाद मै अलग अलग नामों मे जीना चाहती हूॅ।
तभी एक मरीज के वेल पर उसे कैविन छोड़ना पड़ा।
थोड़ी देर के वाद वो फिर कैविन मे वापस आई और मेरा कन्धा सहला कर फिर अपनी कुर्सी पर जा बैठी।मुझे उदास देख कर वो उठी और मेरे पास आकर मेरा पूरा चेहरा अपने दोनो हॉथों मे ले कर उसे अपनी कमर से सटा लिया।मुझसे मेरे अपने ऑसू थामे न जा सके।वो मेरे वाल सहलाती रही।
इस शाम के वाद पता नही क्यों वो मुझे हर कोण से ही वीमार दिखने लगी।चाहे वो जिस शिफ्ट मे भी होती थी.मै उसके पीछे एक साये की तरह लगा रहता था।मुझसे जितनी भी उसकी मदद की जा सकती थी.मै करता था।मरीजों के गन्दे बैंडेज से लेकर उनके टट्टी पाखाने तक मैने उसके साथ साफ किए।उन्हे लिटाने विठाने मे भी मै उसकी मदद करता था।वो मना कर कर के हार गई.पर मै उसकी एक न सुनता था।
मुझे भी एक न एक दिन मार्टिन लूथर छोड़ना था और वो दिन आ भी गया।इस सप्ताह मे भी उरसला की नाईट शिफ्ट थी।स्वेस्टर मारीना ने चलते समय अपनी तरफ से मुझे एक रैप किया प्रालिन का डिव्वा पकड़ाते हुए मेरे स्वास्थ्य की कामनायें और ढेर सारी हिदायतें दी और साथ मे एक और प्रेजेन्ट भी.जो उरसला का था।इसे मैने घर पर आ कर खोला।ये एक छोटा सा दफ्तियों का वक्सा था.जिसमे सैंकड़ो लिफाफे थे।साथ मे एक छोटा सा कार्ड भी थाः
प्रिय सत्य
आज जव मै काम पर आऊॅगी तो तुम मुझे खिड़की की तख्त पर वैठे न मिलोगे।मुझे तुम्हारी वड़ी याद आएगी।दो सप्ताह लगातार तुमने मेरी जो मदद की.उसे मै कभीं न भूलूॅगी।कुछ व्यक्तिगत तुमसे कहना था.जिसमे तुम्हारी हमेशा रूचि रही और मै तुम्हे टालती रही।कहने सुनाने को मेरे पास ऐसा कुछ खास नही है।न मेरे पास तुम्हारी तरह कोई चहकता वचपन है और न तुम्हारी तरह सैकड़ों सम्वन्धी या दोस्त।तुम्हारी ऑखों की चमकें दिन रात मेरे ऑखों के सामने तिरती रहती है.खास कर के वो.जव तुम अपने रमौता चाची के वारे मे वताते थे।वस एक मॉ है मेरे पास .जिनसे मिले मुझे वर्षो हो गए।वो म्यूनिख मे कहीं रह रही हैं।शराव और पराये मर्द उनकी दो वड़ी कमजोरियॉ थी और शायद आज भी होंगी।ऐसे ही माहौल मे मैने अपने वचपन के ग्यारह वर्ष गुजारे।इसके वाद मै गायन होफन के एक क्लोस्टर मे आ गई।एक नन वन कर आजीवन तुम लोगों की सेवा करने का जो मैने निर्णय ले लिया था.वो साकार न हो पाया.जिसकी वजहें मै तुम्हे नही वता सकती।आवी करने के वाद मै वर्लिन आ गई और यहीं मैने नर्सिन्ग का कोर्स किया।कोर्स के वाद ही मुझे मार्टिन लूथर मे काम मिल गया।अव मरीजों की सेवा ही मेरे जीवन का व्रत है।चर्चो मे मेरी जो आस्था है.वो आजीवन वनी रहेगी।शादी व्याह और घर वसाने की मुझे कोई चाह नही है।
अगर मुझे ये पता होता कि मेरा डिक्ल्येरेशन तुम्हे इस कदर परेशान करेगा तो वो मै तुम्हे पढने को कभीं न देती।
तुम अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना।तुम्हारा गेस्वूअर विल्कुल ठीक हो गया है.फिर भी अपने खाने पीने का ख्याल रखना।सिगरेटें तो गलती से भी न छुना।मै ईश्वर से तुम्हारे स्वास्थ्य और तुम्हारी खुशियों के लिए हमेशा कामना करती रहूॅगी।
तुम्हारी
उरसला
उसका दिया वक्सा और उसकी तश्वीर आज तक मेरे मेज पर ठीक मेरे ऑखों के सामने रखी हुई हैं।विना इन्हे देखे निहारे मै सोने नही जाता।
उसके कब्र पर दुवारा मै तव गया.जव अप्रत्याशित वर्लिन का मौसम सिर्फ तीन दिनों के लिए अपेक्षाकृत ठीक ठाक हो गया था।मेरे पास एक छोटी सी ट्राली थी.जिसे मै अपनी सायकल के पीछे जोड़ सकता था।मै एक गार्डेन सेन्टर मे गया और वहॉ से हरी दूव के वीज.पॉच सौ लीटर मिट्टी.चार आत्सालेयेन के पौधे और एक छोटा सा वर्च का पौधा खरीदा और इन सारे सामानो के साथ उसके कब्र पर गया।दूसरे औजार मुझे कब्रगाह के दफ्तर से मिल गए।सवसे पहले मैने वहॉ के जन्गली घास साफ करके वहॉ दूव वोए।सिरहाने एक वर्च का पौधा लगाया और पैताने आत्सालेयेन के चार पौधे।
दूसरे दिन मैने लाल रंग से चारदीवारी के एक एक ईटें रंगे.पर इस कब्र को एक नाम चाहिये था।एक एपिटैफ को वहॉ खड़ा करवाना मेरे सामर्थ्य मे न था।फिर भी मै उरसला को एक वायदा कर आया था कि जिस दिन मेरे पास इतने पैसे जमा हो जाएॅगें.मै तुम्हारी कब्र पर एक एपिटैफ भी खड़ा करवाऊॅगा।
मार्टिन लूथर छोड़ने के वाद मै उसे रोजाना ही फोन करता था।मुझे एक वो शाम भी याद है.जव वो करीव करीव एक अपरिचित भाषा मे मुझ पर झल्ला पड़ी थी ःक्या जानना चाहते हो तुम मेरे वारे मे!तुम्हे अच्छी तरह पता है कि मेरे पास घर पर कितना समय होता है!थोड़ा वहुत समय मुझे अपने दोस्त के साथ भी गुजारना होता है और तुम कैसी हो.कहके घन्टों फोन से चिपके रहते हो।मेरी भी एक प्राईवेट लाईफ है।
मुझे फोन काट देना पड़ा।
दो वातें मुझे इस शाम अच्छी तरह समझ मे आई।मै जर्मनी मे हूॅ.इन्डिया मे नही हूॅ।यहॉ भावनायें सिर्फ उन्ही नहरों मे वहाई जाती हैं.जिनके अपने नाम होते हैं।यहॉ सम्वन्ध एक सम्वन्ध है.कानूनी या हक़ीकतन।इल्यूशन मे यहॉ न कोई सम्वन्ध पाला जाता है और न पोसा जाता है।
दूसरी वात उरसला नाम के नहर को मै किसी सम्वन्ध का नाम न दे सका था.गोकि वहॉ वहने को मेरी भावनायें सदा तत्पर रहती थीं।उसके

अपनापन मे एक अजीब सा परायापन था। पलक झपकते ही मुट्ठी मे भींचे रेत की तरह वो उँगलियों के बीच से सरक जाती थी। उसका एक हॉथ हमें पास बुलाता था और दूसरा परे धकेल देता था।
बड़ा दुष्कर था, उसके समीप पहुँचना या फिर उसका सानिध्य पाना।
अगर वो मुझे एक हल्का सा भी संकेत दी होती तो मै उसे अपना लिया होता और आजीवन उसे अपना प्यार और अपनी सेवा देता, पर वो ये सब कुछ चाहती ही न थी।
मै भी निर्लज्ज न था। भरे मन से मैने अपने समवेत सम्पर्क उससे तोड़ लिए, पर मै उसे भूला न था। उसे मै भूल भी नही सकता था।
मेरे पास जो संवेदनशीलता थी, उसे यूरोप मे अपरिपक्वता कहा जाता था, जिसे मै मानने को तैयार न था। इनका ये ख्याल था कि सम्बन्धों मे दिल और दिमाग दोनो का सक्रिय होना जरूरी है और मेरा ये हाल था कि जहॉ भी मेरा दिल सक्रिय हुआ, वहॉ मेरे दिमाग को सन्निपात मार गया।
समय अपनी धूरी पर नाचता रहा। पढाई खत्म करने के बाद मुझे क्लिनिकुम स्टेगलित्स मे काम मिल गया।
ये क्लिनिक फ्री यूनीवर्सिटी बर्लिन के तहत है और इसके पास एक यूनि क्लिनिक का स्टेटस है। इसे आधे से ज्यादे फिनान्स सेन्ट्रल गवरमेन्ट से मिलते हैं। यहॉ साढे पॉच हजार लोग काम करते हैं। यहॉ न सिर्फ मरीजों का इलाज होता है, बल्कि तरह तरह के अनुसंधान भी किए जाते हैं। यहॉ मेडिकल स्टूडेन्टों की क्लासें भी लगती हैं। इसके पास अपने दो हेलीकाप्टर्स भी हैं, जिनसे हाईवेस पर हुए दुर्घटनाओं मे घायल मरीज यहॉ लाए जाते हैं। यहॉ के कई प्रोफेसर्स और डाक्टर्स विश्वविख्यात हैं।
सन साठ मे इस क्लिनिक का निर्माण एक अमेरिकन आरखिटेक्ट की देख रेख मे शुरू हुआ, जो चार वर्षो तक चला। अमेरिका ने भी दबा कर इसमे पैसा लगाया। आज के दिन मे तो नही, पर सन सत्तर के आस पास ये क्लिनिक यूरोप का सबसे बड़ा और माडर्न क्लिनिक माना जाता था।
इस क्लिनिक के इर्द गिर्द न जाने कितने हजार एक्कड़ जमीन मे फैला एक हरा भरा लॉन है जिसका एक हिस्सा मै भी जानता हूँ, क्योकि ये उरसला का सर्वप्रिय था।
इस क्लिनिक के तीन तरफ बर्लिन की तीन व्यस्त सड़के हैं, हिन्डेनबुर्ग डाम क्लिंगजोअरस्ट्रासे और बिर्कबुशस्ट्रासे। मेन इन्ट्रेन्स हिन्डेनबुर्ग डाम पर है। क्लिनिकुम के बॉई तरफ एक टेल्टो नाम की चौड़ी सी नहर है जिसमे बड़े बड़े ज़हाज चलते हैं।
काम से मेरा घर करीब ही था और मै काम पर सायकल से जाता था। अक्सर मै क्लिंगजोअरस्ट्रासे ही लेता था और क्लिनिकुम के रिशेप्शन हॉल से होता हुआ अपने काम पर जाता था। इस हॉल की दीवारों पर न जाने कहॉ कहॉ के आर्टिस्ट अपने चित्रकारियों की प्रदर्शनियॉ लगाते हैं। हॉल मे तकरीबन सौ से भी ऊपर सोफे लगे हुए हैं जो मरीजों से भरे ही रहते हैं। जगह जगह बड़े बड़े बाज़े रखे हुए हैं, जिनके फूल रोज ही बदले जाते है।
काम पर मुझे ठीक साढे सात बजे सुबह पहुँचना होता था पर मै जब इस हॉल से होकर गुजरता था, तो वहॉ के एक दीवार की घड़ी मे सात बज के बीस मिनट बजते होते थे।
एक दिन मै इस हॉल से गुजर रहा था कि मुझे एक मरीज दिखा, जिसका चेहरा तो मुझे जाना पहचाना लगा, लेकिन दिमाग पर जोर डालने के बावजूद भी मै उसे पहचान न पाया। जब मै अपने काम पर के ऑटोमेटिक दरवाजे का कोड नम्बर दबा रहा था कि अचानक उरसला का चेहरा मेरे दिमाग मे कौंधा। मेरे तो हॉथ पैर ढीले होने को आए। मेरा मन ही न मान रहा था कि पॉच मिनट पहले रिशेप्शन हॉल मे मैने उरसला को देखा था। इस तरह सूख कर कॉटा हुई लड़की बर्लिन मे मैने अब तक न देखी थी और यही वजह थी कि मेरी उस पर नज़र भी पड़ी। सर पर एक बाल तक न थे। फिर से लौट कर रिशेप्शन हॉल मे जाने की हिम्मत मुझमे न थी। काम पर भी मेरा मन न लग रहा था। कई बार चाहा कि टेलीफोन एक्सचेन्ज मे फोन करूँ, पर मेरी हिम्मत टेलीफोन पर भी जाने की न हुई। मै देखे चेहरे कभीं नही भूलता और मै नही समझता था, इस बार भी मुझसे कोई भूल हुई होगी।
दोपहर के खाने के बाद मुझसे न रहा गया। मैने एक्सचेंज मे फोन किया।
दुर्भाग्यवश इस बार भी मुझसे कोई भूल नही हुई थी।
उरसला को वार्ड दो के सतरह नम्बर के कमरे मे रखा गया था। मेरा मन डूबने को आया, क्योंकि मुझे पता था कि इस वार्ड मे कैंसर के मरीजों का इलाज होता था। काम के बाद तान्या ब्लूमेन शॉप, जो अस्पताल के परिसर मे ही था, मैने दस ताजे गहरे लाल रंग के बड़े बड़े गुलाब खरीदे और सीढियों से वार्ड नम्बर दो की ओर बढ चला। मुझे ज्यादे सीढियॉ न चढनी पड़ी। ये वार्ड तीसरी मंजिल पर ही था। उरसला से मिलने से पहले मै किसी एक नर्स से ही मिलना उचित समझा। डयूटी पर एक कोनी नाम की नर्स थी, जिसे मै बस चेहरे से ही जानता था। उसी से मुझे उरसला के बारे मे सब कुछ पता लगा। सबसे पहले उसे ब्रेस्ट कैन्सर हुआ, जिसे ऑपरेट करके हटा दिया गया, पर ये बहुत ही कामयाब ऑपरेशन न था। कुछ ही महीनो के बाद उसे ब्लड कैंसर हो गया। पिछले तीन वर्षो से उसे हमारे ही अस्पताल से बहिरंग चिकित्सा मिली। परिणाम मे उसे अपने सर के सारे बाल खोने पड़ गए। बस दो तीन महीनो की जिन्दगी उसके पास थी या फिर शायद और कम। वार्ड नम्बर दो के जिस हिस्से मे उसे कमरा मिला था, वो इस वार्ड का पैलिएटिव हिस्सा था, यानि इस हिस्से के कमरों मे रखे गए मरीजो का इलाज नही किया जाता था, बल्कि मॉर्फीन से उनके उभरे दर्द बस कम कर दिए जाते थे।
मै उससे मिल सकता था। बड़े भारी मन से मै कोनी को धन्यवाद बोल के कमरा नम्बर सतरह की ओर बढा।
उरसला के एपिटैफ के लिए मुझे बहुत लम्बा इन्तज़ार न करना पड़ा। अचानक मेरे एकाउन्ट मे उसके वकील ने उसके वसीयत के अनुसार सात हजार मार्क ट्रान्सफर कर दिया। उसका वकील फोन पर न जाने कौन कौन से ऑकड़ें सुनाने लग पड़ा, जिनमे मेरी कोई रूचि न थी। मुझे फोन काटना पड़ा।
मै कई वेस्टाटूंग इन्सटिच्यूटों मे गया, पर बर्लिन का एक इन्सटिच्यूट मुझे सबसे ज्यादे पसन्द आया। वहीं मैने एक सफेद संगमरमर की पट्टी पर उरसला का पूरा नामःउरसला स्लिंगर खुदवाया। उरसला की उम्र तो मै जानता था पर उसके जन्म के दिन और महीने का मुझे पता न था। नाम के नीचे मैने एक काली डाल पर लगे गाढे लाल रंग के आत्सालेयेन के फूल खुदवाए और उनके नीचे एवरहार्ड म्यूलर की दो पंक्तियाःआईन डू कान नूअर फिन्डेन
वेयर आईन इख फेरशेन्क्ट...

एक तुम वही ढूँढ पाता है जो अपना स्वयम भेंट मे दे देता है।
इस एपिटैफ को मैने उरसला के सिरहाने वर्च के पौधे के सामने जुड़वा दिया।
मै जब भी उरसला के पास जाता हूँ..उसकी कोई न कोई बात गई रात तक मेरे कई घन्टे उलट पलट देती है।
एक छोटे से शब्द या एक छोटी सी प्रतिक्रिया मे यादों का एक अटूट सिलसिला या कारवॉ समाया होता है.जिन्हे मै शायद कभीं शब्दों मे नही वॉध पाऊँगा।
जब मै उससे अपने ही अस्पताल के वार्ड नम्बर दो मे उसके कमरे मे मिलने गया तो वो अपनी गर्दन टेंढी करके मुझे मिनटों तक अपलक देखती ही रही और मै अपनी जगह से हिल तक न पाया।इशारे से ही उसने मुझे अपने पास बुलाया और जरा खिसक कर मेरे लिए अपने कमर के पास बैठने की जगह बना दी।मै वहॉ जाकर बैठ गया.अपने गुलदस्ते को अपनी दोनो टॉगों के बीच दबाये।पता नही उरसला किस सोच मे व्यस्त थी और मै किस सोच मे!
तभी मुझे अपने पीठ पीछे एक मधुर सी आवाज सुनाई पड़ीःये फूल मेरे लिए हैं या किसी और के लिए!
बिना उसकी ओर देखे मैने अपना गुलदस्ता उसकी ओर बढा दिया।
अपनी पीठ पीछे मैने उसके कई शब्द सुने...
कैसे हो सत्य!
ःयहॉ किससे मिलने आए थे!
ःतुमने मुझे कैसे पहचान लिया!
ःतुमने चश्मा कब से पहनना शुरू किया!
ःतुम्हारे सर के एक बाल तक नही पके!
कम से कम उरसला से उसका अभिमानी ईश्वर उससे दो चीजें अव तक न छीन पाया था।उसकी नज़र और उसकी आवाज।इन दो चीजों के अलावे उसके पास कुछ न वचा था।
मई का महीना चल रहा था।क्लिनिकुम का विस्तृत लॉन हरा भरा हो चला था।जगह जगह लगे गुलाव के सैकड़ों हजारों पौधे रंग रंग के फूलों से लदे पड़े थे।दूर दूर तक मखमली घासें नज़र आती थी।इसके दक्षिणी भाग के टाईख कमल और कुमुदनी के फूलों से भर चले थे।टाईख के किनारों पर लगाए गए वॉस के छोटे छोटे झाड़ों पर नई नई पत्तियॉ आ चुकी थीं।शायद ही लॉन का ऐसा कोई भाग रहा होगा.जो मरीजों या उनसे मिलने आए लोगों से न भरा रहता हो।
जब मैने उरसला से पूछाःवाहर कितना अच्छा मौसम है।घूमने चलना है!
तव वड़ी ही अशक्त आवाज मे उसने कहाःमुझसे ज्यादे लम्वा चला न जाएगा।फिर भी तुम्हारी मर्जी।
वार्ड के फ्लोर पर चार पॉच रोलिन्ग चेयर्स थे।मै उनमे से एक को झाड़ पोंछ कर उसके पास ले आया और उसे सम्हाल कर उसमे विठा कर कर उसके कपड़े लत्ते सहेज कर लिफ्ट की ओर बढ चला।एक सिल्क के दुपट्टे से उसने अपना सर ढँक रखा था।घन्टों मै उसे क्लिनिकुम के लॉन मे घूमाता रहा।उसे मै टाईख पर भी ले गया।रह रह कर वो टाईख मे फूदकते टरटराते छोटे छोटे मेढकों को देख कर चहकने लगती थी।हमारा ज्यादे समय वहीं गुजरा।उरसला टाईख निहारती रही और मै उसके चेयर के बगल मे बैठा अपने मार्टिन लूथर क्रान्केनहाऊस मे विताए दिनो मे खोया रहा।
सात बजने को आए।उरसला के कहने पर मुझे उठना पड़ा।
लिफ्ट मे अचानक अपने हॉथ से मेरी कलाई सहलाते हुए विनती के स्वर मे उसने मुझसे पूछाःएक काम तुम मेरे लिए कर सकोगे!
मैने तत्परता से हॉ कह दिया।
ःजल्दी मे मै अपना एक सूटकेस घर पर भूल आई।जरूरत के सामान थे।कभीं वक्त मिले तो उसे मेरे पास ला सकोगे!
ःहॉ क्यों नही.पर इन छोटी मोटी बातों के लिए तुम मुझसे विनती क्यों करती हो!घर की चावियॉ कहॉ है!
ःकमरे मे
ःठीक है मुझे दे दो.आज ही ले आता हूँ।
ःनही नही इतना भी जरूरी नही है।कल परसों कभीं भी ले आना।काम के वाद तुम भी तो थके होगे।
एक अजीब सा सन्नाटा वार्ड मे छाया हुआ था।दूसरे मरीज शाम का खाना खा कर अपने विस्तरों मे जा चुके थे।फ्लोर के दॉई ओर वने ग्लास चैम्वर मे दो नर्सें वैठी थीं।एक किसी फाईल मे खोई हुई थी और दूसरी किसी फोन मे व्यस्त थी।हम कमरे मे आए।वेड के वगल वाले टेवल पर उरसला का खाना एक ट्रे से ढँका रखा हुआ था।
उरसला को सम्हाल कर मैने उसके विस्तर पर लिटा दिया.फिर कमर तक उस पर चादर डाल कर मैने उसका सिरहाना जरा ऊँचा करके उसे खाने का ट्रे पकड़ा दिया।एक विना सेंका टोस्ट.एक छोटे मक्खन का ब्लॉक.एक छोटी सी डिविया मे वेरी की जेली और एक ग्लास मे दो घूँट नारंगी जूस.जिनसे एक गौरईया का पेट भी मुश्किल से भर पाए।
खाने से पहले अपने टेवल की दराज खोल कर घर की चावियॉ मुझे देते हुए अपने मकान का पता वताया।टैक्सी के लिए उसने मुझे पैसे भी देने चाहे.जिसका कोई सवाल ही पैदा न होता था।
टैक्सी ले कर मै इसी दिन उसके मकान मे गया.जो चारलोटेनवुर्ग मे रिचर्ड वागनरस्ट्रासे पर तीसरी मंजिल पर था।जव मैने कमरे की वत्तियॉ जलाई तो एक वार मेरा जी धक करके रह गया।दो कमरे का मकान खाकी रंग के पैक्ड कार्टोन्स से भरा पड़ा था।कपड़ों की ही नही.कीचन की भी सारी आल्मारियॉ खाली पड़ी थीं।चूल्हा ढँका पड़ा था।विस्तर भी एक कम्वल से ढँका पड़ा था।सारे पर्दे गिरे हुए थे।तभी मेरी नज़र उसके पढने लिखने वाली मेज पर पड़ी.जहॉ एक मढा फोटो था.जो उसका था।मै वो फोटो अपने हॉथ मे ले कर उसे गौर से देखने लगा।इस फोटो मे उसकी उम्र यही कोई बीस वाईस वर्ष की होगी।एक लम्वी काली स्कर्ट और पूरे वॉह की सफेद व्लाउज पहने वो थोड़ी तिरछी इतराती सी खड़ी अपने जूड़े दिखा रही थी।वो किसी अप्सरा से कम न लग रही थी।उसके सूटकेस को ढूँढने मे मुझे कोई परेशानी न हुई।वो मकान मे घूसते ही

वाथरूम के दरवाजे के सामने पड़ा था।चलते वक्त मैने उरसला की फोटो भी साथ रख ली।
मै अपने घर वापस आ गया।
दूसरा दिन शनिवार का था।मुझे बस चार घन्टे के लिए काम पर जाना होता था।काम से वापस घर आ कर पहले मैने आठ दस समोसे तले फिर इलायची की चाय बना कर एक थर्मस भरा।दो बजे एक टैक्सी लेकर मै क्लिनिकुम जा पहुँचा।उरसला अपने कमरे मे खिड़की के सामने एक कुर्सी पर वैठे वाहर कुछ देख रही थी।मेरे आने की आहट सुन कर हल्के से उसने अपना चेहरा मेरी ओर किया।सूटकेस उसके विस्तर के वगल मे रख कर मै उसके पास गयाःक्या देख रही हो!
ःतुम्हारे क्लिनिक के हेलीकाप्टर को।देखने मे कितना असुरक्षित लगता है.पर कितना सुरक्षित उड़ता है।
ःमकान ढूँढने मे कोई परेशानी तो न हुई!
ःबिल्कुल नही।पर एक बात मै तुम्हे बता देना चाहता हूँ।तुम्हारे मेज पर की फोटो अव मेरे मेज पर है और अब वहीं रहेगी।उसे वापस न माँगना।
उसने कुछ न कहा पर पता नही क्यों मुझे ऐसा लग रहा था.जैसे वो कल की अपेक्षा आज कुछ ज्यादे ही चुप है।मेरे समोसे और चाय उसे बड़े भाए।रह रह कर मै उसे अपने सवालों से कुरेदता रहता था पर मेरे सवालों का छोटा मोटा जवाव दे कर फिर वो कहीं खो जाती थी।कहीं फोटो की बात उसे बुरी तो नही लग गई!पहले मुझे उससे पूछ लेना था।जव मैने उसकी वात चलाई तो उसने इसे अनसुना कर दिया।वो गुमसुम बनी रही।रह रह कर वो अपना मुँह या अपनी आँखें फेर लेती थी।मैने भी अब उससे कुछ पूछना वन्द कर दिया।चुपचाप बस उसे यहाँ वहाँ घूमाता रहा।
अब काम के बाद बस मेरे पास यही एक व्यस्तता थी।वीकएन्ड तो करीव करीब उसी के संग गुज़रता था।उसे बहलाने के लिए मै पता नही उसे कहाँ कहाँ की बातें सुनाता रहता था।एक दिन उसे छेड़ने के लिए मैने उससे पूछाःतुम्हारे पास एक दोस्त भी तो होता था।कहाँ है वो!
उसने अपनी एक काँपती उँगली मेरी ओर उठा दीःतुम्हारे सिवाय मेरा अपना कोई नही है।
मेरा गला रूँधने को आया।मै उठ कर उसके समीप गया और सम्हाल कर उसे उठाया और अपने सीने से चिपका लिया और मिनटों तक उसे अपने सीने से चिपकाये रखा।वो तो कव की सो चुकी थी और मेरे आँसू थमने का नाम तक न ले रहे थे।
उससे आकर मिलने वालो मे विना किसी अपवाद के उसके कलिग्स या फिर चर्च की दूसरी गतिविधियों के परिचित होते थे.जिनमे से कोई भी मुझे उसका खास सगा न लगता था।ये वहाँ सिर्फ अपनी औपचारिकतायें निभाने आते थे।
एक दिन उसने मुझसे पूछाःमेरा मकान तो तुम देख आए हो।वहाँ की कोई दूसरी चीज तुम्हारे काम नही आ सकेंगी!
मै इस प्रश्न के लिए तैयार न था.पर अपने को बेहद अपमानित महसूस किया।मुझे लगा जैसे वो मुझे किसी बात का मेहनताना देना चाह रही हो।मेरी कोर नम होने को आई।
रास्ते भर वो वस मेरी एक वाँह पर अपना सर धरे सुवकती रही।उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था।
उसे वाहर ले जा कर घूमाने का क्रम बहुत लम्बा न चला।
उसे कुछ ज्यादे ही मॉर्फीन दिया जाने लगा।वो अव मुझे अपने विस्तर पर सोये ही मिलती थी।वीकएन्ड मे कभीं कभार वो अपनी आँखें खोलती थी।मुझे वो पहचान लेती थी.पर कुछ बोल न पाती थी।वस इशारे से पास आने को कहती थी.फिर उसकी पलकें मूँदने लगती थीं।मै उसके समीप वैठा दिन भर कोई उपन्यास पढता रहता था या फिर उसके एकाकी जीवन के वारे मे सोचा करता था।एक अन्याय जो मुझे उसके इर्द गिर्द नजर आता था.इतना ताकतवर था कि उसके सामने सिवाय घुटने टेकने के दूसरा कोई चारा ही न था।प्रार्थनाओं के लिए भी कुछ ज्यादे वक्त तो न रह गया था.फिर भी मेरे दोनो हाँथ अक्सर एक दूसरे से जुड़ जाते थेःहे भगवान!तुम्हारे लिए तो कुछ भी असम्भव नही है।सिर्फ एक वार तुम मुझे अपनी महत्ता दिखा दो.जीवन भर के लिए मै तुम्हारा दास बन जाऊँगा।
जो दिल उरसला के सीने मे धड़क रहा था.उसे न जाने कितने दिलो मे तिरोहित हो जाना था.पर ऐसा कुछ मुझे न दिख रहा था।विना किसी अपेक्षा के एक उपेक्षिता अपने जीवन की आखिरी साँसे गिन रही थी।
ये तीन अगस्त की रात थी।रात के ठीक ढाई बज रहे थे कि मेरा फोन तीन बार बज के कट गया।मै आनन फानन कपड़े पहनने लगा.तभी मेरी हैन्डी का वेल वजाःस्वेस्टर मानुएलाःउरसला का आखिरी समय आ गया है।उसे ओ पे मे ले जाया गया है।
कव उरसला ने अपनी आँखे मूँदी!उससे उसके शरीर का कौन सा हिस्सा अलग किया गया!कव उसे दफनाया गया!उसके मकान और सामानों का क्या हुआ!उसकी कब्र पर कॉस्मिया के फूल किसने लगाए थे!ये सवाल आज तक मेरे सामने अनुत्तरित हैं।
काम के बाद अनायास ही मै अपनी सायकल वेर्गस्ट्रासे की ओर मोड़ देता हूँ।विना उरसला से मिले मै घर वापस नही आता।एक वात का मुझे हमेशा दुःख रहता है कि इन पिछले तमाम वर्षो मे मुझे उसकी कब्र पर कभीं कोई न दिखा.न मिला।

प्रमोद कुमार सिंह